www.shodhpith.com ISSN (Online): 3049-3331

Shodhpith
International Multidisciplinary
Research Journal
(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)
(Multidisciplinary, Bimonthly, Multilanguage)
Volume: 1 Issue: 5 September-October 2025

भामती उपन्यास मे नारी विर्मश

डॉ. राज कुमार राय

सहायक प्राचार्य, मैथिली, वि.सि.जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

पद्म श्री डॉ0 उषा किरण खान मैथिली साहित्यमे कथा एवं उपन्यास लए उपस्थित भेलीह। यद्यपि हिनक लेखनक मूल श्रोत हिन्दी रहलनि। मुदा मैथिली मे सेहो कम नहि लिखलनि। दू गोट कथा संग्रहक संगहि पाँच गाटे उपन्यासक रचना कयलनि। डॉ0 खान इतिहासक प्राध्यापिका छलीह। एहि ऐतिहासिक अनुभूति के ओ उपन्यासक रूप मे समाजक समक्ष रखैत छथि। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि सँ लिखल हिनक तीन गोट उपन्यास अछि। ''हसीना मंजिल' (1995) भारत विभाजनक त्रासदी के चित्रित करैत अछि। वासूकी नाथ झा मन्तव्य द्रष्टव्य अछि,–

'उपन्यास' हसीना मंजिल' विशेषताक नव दृष्टान्त प्रस्तुत करैत अछि। एकर कथा वस्तु मिथिलाक जनजीवनक ओहि वर्गक प्रतिनिधित्व करैत अछि जकरा मैथिली साहित्य मे अत्यल्प (लगभग नहिएँ) स्थान भेटलैक अछि। तात्पर्य ई जे एहि मे मिथिलाक मुसलमानक सेहो सामाजिक–आर्थिक दृष्टि सँ विपन्न वर्गक जीवन कथा केँ सहजता सँ अभिव्यक्त कएल गेलैक अछि। विशेषो मे विशेष ई जे नारी स्वाबलम्बन एवं आत्म विश्वास एहि उपन्यासक कथा सूत्रक आधार अछि। संगहि वातावरणक दृष्टि मे भारत पाकिस्तानक विभाजन तथा पाकिस्तान–बांग्लादेशक विभाजन पृष्ठभूमिक काज करैत अछि। एहि दुनू विभाजनक विषाक्त वातावरणक परिणति केँ एहि भावुकता प्रधान उपन्यास मे अत्यन्त चतुरता सँ समाहित कएल गेल अछि।''[1]

एहि उपन्यासक उद्देश्यक निर्धारण करैत मोहन भारद्वाज लिखैत छथि–'' एक दृष्टि कोण सँ ई उपन्यास हमरा आकर्षक लागल अछि। आइ–काल्हि नारी–स्वातंत्र्यक बड़ हल्ला अछि। तथा कथित प्रगतिशीलो रचनाकार सभ नारी उत्थानक ढ़ोल पिटैत रहैत छथि। हुनका लले आम लोकक दुख–सुखक मोल नहि छैक–मोल छैक हरिजन पर होइत अत्याचारक, नारी शोषणक, हमरा जनैत ई सभ खण्ड–खण्ड पाखण्ड पर्व थिक। नारी–स्वतंत्रताक व्याकुलता एकटा छद्म थिक। 'हसीना मंजिल एहि पृष्टभूमि मे आदर्श अछि। अन्तिम किछु अंश केछोड़ि कऽ एहि मे कतहु नाराबाजी नहि अछि। सकीनाक जीवन शैली आ चिन्तन धारा बिना कोनो हल्ला–गुल्ला केँ नारीक अस्मिता केँ देखार करैत अछि–सहजात रूप मे सही स्तर पर। सकीना कोनो दलित मुसलमान वा शोषित नारीक प्रतिनिधि बनि कऽ नहि, सहिष्णुता सँ।, संघर्ष शीलता, तथा अन्तः प्रेरित राग–विरागक प्रतीक बनि कऽ अबैत अछि। मानवीय चरित्रक सौन्दर्य ओकर निजी गुण छैक।''[2]

दोसर ऐतिहासिक उपन्यास 'भामती' 2007 मे प्रकाशित भले एकर लेखनक विचार विन्दु के निरूपित करैत उषा किरण खान लिखैत छथि– ''लगातार एकटा प्रश्न मोन के मथैत रहय। सातम शताब्दी केर उतरार्द्ध मे आदि शंकराचार्य मंडन मिश्र सँ शास्त्रार्थ करक लेल मिथिला भूमि आयल छलाह। सुदूर दक्षिण महासागर तट सँ सुदूर उत्तर पूर्व विराट हिमालयक तल हट्टी म। शंकर आ मंडनक शास्त्रार्थक जीवन्त चर्च युग युगान्तर पार करैत, भौगो. लिक सीमा पार करैत वातावरण मे व्याप्त अछि आ व्याप्त अछि कथा जे भारती, मंडन मिश्रक अर्द्धांगिनी शास्त्रार्थ केर जज छलीह। ओएह निर्णायक छलीह। निर्णायक जज कोनो मूर्खा स्त्री नहि भए सकैत छथि। ओ विदुषी कहल गेल छथि।... हमर मूल प्रश्न मोनक छल जे मात्र डेढ़ सय वर्ष मे कोन एहन विपत्ति पड़लैक मिथिला मे जाहि सँ

एहन अन्धकार पसरि गेलैक जकर उदाहरण वाचस्पति आ भामती छथि। पाँचम शंकर भाष्य देलथिन्ह। बिनु मैथिल विद्वानक टीका कयने पोथीक उद्धार नहि छलैक, तेहन सन। वाचस्पति मिश्र सहर्ष स्वीकार कयलनि मंडन मिश्रक मूल पोथी, शंकरक भाष्य तकरा पर टीका। मनोनुकूल विषय छलन्हि मंडन मिश्रक प्रचण्ड समर्थक वाचस्पतिक लेल। उद्भट्ट विद्वान छलाह। विद्वताक सब सँ पैघ प्रमाण देबा लेल ई अवसर वाचस्पति हाथ सँ नहि जाय देलनि।''[3]

तेसर ऐतिहासिक उपन्यास अछि–'पोखरि रजोखरि'। ई उपन्यास देशक स्वतंत्रता सँ पूर्व आ स्वतंत्रताक बाद धरिक करीब सत्तरि वर्षक मिथिलाक राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक सामाजिक आ सांस्कृतिक इतिहास के अपना मे संजोगने अछि। स्वतंत्रता सँ पूर्व जे आन्दाले नक अवधि मे सामाजिक मूल्य सभ स्थापित भेल से क्रमशः समाप्त भए रहल छल। एहना मे उपन्यास मिथिलाक नव तुरिया वर्ग पर आस्था व्यक्त करैत अछि। उपन्यास मे मिथिलाक तीन पीढ़ीक सोच–व्यवहार मे होइत परिवर्तन के अकानल गेल अछि। बहुतो परिवारक कथाक माध्यम सँ सामाजिक सम्बन्ध, राजनीतिक वर्चस्व ओ सांस्कृतिक क्षरण के रेखांकित कयल गेल अछि। बहुतो परिवारक कथाक माध्यम सँ सामाजिक सम्बन्ध, राजनीतिक वर्चस्व ओ सांस्कृतिक क्षरण के रेखांकित कयल गेल अछि। पघाड़ीबाली चम्पा के हुनक प्रोफेसर पति महेन्द्र ठाकुर छोड़ि दैत छथिन। ओ दोसर विवाह कऽ लैत छथि। चम्पा ने हुनका कोनो आधुनिक आकर्षण नहि देखाइ दैत छनि। चम्पा अपन बेटा मुकुन्द के पढ़बै–लिखबै छथि।

एकर अतिरिक्त हिनक दू गोट सामाजिक उपन्यास अछि–दुर्बाक्षत (1987) आ अनुत्तरित प्रश्न (1980) मे प्रकाशित भेल अछि जाहि मे समाजक विभिन्न विद्रूपता के देखबैत एकटा एहन प्रश्न ठाढ़ कयलनि अछि जकर उत्तर अद्यावधि नहि भटेल।

ओना प्रत्येक उपन्यास मे उषा किरण खान नारी जनित समस्या आ ओकर विभिन्न स्वरूपक चित्रण भेल अछि। एहि सम्बन्ध मे कथाकार अषोक लिखैत छथिः–'' उपन्यासकार रूप मे उषाकिरण खान मिथिलाक स्त्रीवर्गक सम्मान, आर्थिक रूप सँ स्वालम्बन स्त्रीक दशा मे परिवर्तन लेल सतर्क ओ साकांक्ष रहलीह अछि। हुनक दृष्टि पर इतिहास समाज, संस्कृति क्षेत्र बेसी रहलनि अछि। समाजक पतनषीलता आ मूल्यक पतन हुनका झकझोरैत रहल अछि। हुनक उपन्यास सभ मोटा मोटी समस्या प्रधान रहल अछि। वर्ण व्यवस्था द्वारा संचालित एहि समाज मे हुनक स्त्री पात्र सभ अपन अस्तित्व आ अस्मिता कायम रखबाक लेल समाज मे अपन जगह बनेबाक लेल संघर्ष तऽ करैत छथि मुदा व्यवस्था सँ टकराइत नहि छथि। अपन अस्तित्व लेल फराक व्यवस्थाक निर्माण करैत छथि। एहि सँ पुरुषक वर्चस्व मे चलैत व्यवस्था पर कोनो जरब नहि पड़ैत अछि। तखन ई एक आष्वस्तिदायक बात थिक जे डा0 खानक अमिलाषाक अनुकूल आइ मिथिलाक स्त्रीवर्ग खूब पढ़ि–लिखि रहल छथि आर्थिक रूप सँ स्वावलम्बी भ' रहल छथि।''[4]

एहनक उपन्यास सभ मे जे नारीक स्वरूप भेटैत अछि ओ आन ठाम भेटब दुर्लभ अछि। एहि सम्बन्ध मे तारानन्द वियोगी लिखैत छथिः–''हम पहिनहुँ कहने छी जे स्त्री आ प्रकृति, ई दुनूटा उषा जीक प्रमुख लेखन विषय रहलनि अछि। स्त्री जेना कि कहबे केलहुँ, अपन सम्पूर्ण मानवीय गरिमा आ जिम्मेवारीक संग हुनकर कथा–साहित्य मे आएल छनि। ओकर विस्तार बहुत पैघ छैक–स्थान, काल आ पात्र तीनू तरहेँ ओ दूर–दूर धरि पसरल छैक। एक दिस जँ सुदूर अतीत भेलि भामती छथि तँ दोसर दिस घहघह जरैत निज अजुका वातावरण मे पोसायल अजनास जे अपना दम पर समाज मे परिवर्तन अनबाक स्वप्न देखैत अछि। जाहि गहराइक संग स्त्रीक भूमिका–विधान उषा किरण रचैत छथि, कूटचालि चलि क' मनुक्ख–मनुक्खक बीच कयल गेल तमाम प्रकारक विभाजन हुनका लग आबि क' निरस्त भ' जाइत छैक। ब्राह्मण सँ ल'क' मुसलमान धरि महामहोपाध्याय सँ ल'क' मुरुख–चपाट धरि एकटा सूत्र अछि जे स्त्रीक गरिमा आ भूमिका केँ बेस समरूप क'क' आंकैत अछि। हुनकर बहुता` पाठक एहन भेटताह जिनका हुनकर स्त्री पात्र सब मे हसीना सब सँ बेसी दीप्तमती देखार पड़ैत छनि, आ ओ 'हसीना मंजिल' के हुनकर सर्वश्रेष्ठ कृति मानैत छथि। जखन कि दोसर दिस देखी तऽ मैथिली कथा–साहित्य मे सम्पूर्ण भानवीय गरिमा आ इयत्ताक संग एक तँ मुसलमान समाजक आमदे बहुत कम भेलैक अछि। दोसर जतबा भेलो छैकं ओहि मे मार्मिकताक अकाल देखल जाइत अछि।''[5]

डॉ0 उषा किरण खान' भामती' उपन्यास मे अपन सम्पूर्ण रचना कौशल के आकार प्रदान करैत ऐतिहासिक प्रसंग के सार्वकालिक बना देलनि। नवम शताब्दी मे एहन की भेलैक जे जे स्त्री लोकनि पूर्व मे शास्त्रार्थक न्यायाधीश बनैत छलीह ओ किछु समय मे कोनो घरक खुट्टा सँ पशुवत् बन्हाय गेलीह। एकरा स्पष्ट करैत उषा किरण खान लिखैत छथि–''दन्तकथाक ई वाक्य त्रासदीक पराकाष्ठा अछि। अठारह वर्ष मे कतेको मंजरायित वसंत आयल

आ झूर–झमान भए पतित पुष्प केँ पछवा वायु संग यत्र–कुत्र छिड़िआइत देखि घूरि गेल। कतेक मांसल राति आ 'मार' केर आक्रमण भेल। की रहताह गौतम सिद्धार्थ जे भेलाह बुद्ध कि भामतीक साधना ताहि सँ कोनहुना कम छनि? हमरा मोनक प्रष्न ई जे मात्र डेढ़ सय वर्ष मे स्त्रीक ई स्थिति किएक भऽ गेल जे ओ दीप जरयबाक योग्य मात्र रहि गेलीह। ई सत्य अछि जे उत्तर वैदिक काल सँ क्रमशः स्त्रीक आश्रम मे रहब कम होमय लागल। विवाहक व्यवस्था जहिया बनल आ समाज मे अपन स्थान बनौलक तखनहि सँ देहरि सँ बन्हाय लागलि। मुदा पाठशाला मे कन्या केर उपस्थिति छल। ईहो ऐतिहासिक सत्य अछि जे दषम शताब्दी अबैत–अबैत स्त्री षिक्षाक विलोपन होमय लागल। पाठषाला मे कन्याक संख्या नगण्य भ' गेल। तकर ऐतिहासिक कारण की छैक।

स्त्री–शिक्षाक क्षेत्र मे मिथिला शून्य भ' गेल तकर घोर दुष्परिणाम भले। मिथिला मे उच्चवर्गहु मे मूर्ख सन्तानक ढेरी लागि गेल। प्राचीन कालहि सँ दार्शनिक मनोवृत्तिक होयबाक कारणेँ जीवनक अन्य क्षेत्र अविकसित रहि गेल जकर परिणाम आधुनिक युग धरि देखल जा सकैत छैक। मिथिलाक स्त्रीगणक सृजनषीलता प्रथम श्रेणीक छनि। अशिक्षाक बिहाड़ि मे ओ लोकनि कतय जाए खसलनि? कला आ षिल्पक दिषा मे अपन संचित पारंपरिक शिक्षा केँ संस्कृति मे कोना परिवर्तित कयल जाए तकर एक मात्र उदाहरण छथि मैथिल नारी। अरिपन, कोहबर, भितिचित्र प्रत्येक वर्गक स्त्री अपना सीमित साधन मे बनबैत रहलीह। साम–चकेबा, कतिक कूमर, घाँटो केर क्रीड़ाक क्रम मे शिल्प कलाक उत्कृष्ट उदाहरण दैत रहलीह। ग्रहोपयोगी वस्तुक निर्माण स्थानीय साधन सँ कलात्मक रूप मे प्रस्तुत करब हिनकर विशेषता रहनि, जेना सीक, कोठी, घैलची, चूल्हि, चिनबार आ तुलसी चौरा केर सौन्दर्यीकरण। सीकी आ मूजिक डाला, दौरा, डाली, फुलडाली सनक कतेको वस्तु। प्रत्येक पितृयुगक एकटा अन्तर्धारा मातृसत्तात्मक सेहो होइत छैक। तैं हेतु मैथिल बेटी कला कौषल सँ अपना केँ सम्पन्न राखैत गेलि, युग युगान्तर पार होइत रहलैक, बीतैत रहलैक मैथिल कला विकसित होइत रहलैक तहिना औषधि, वनौषधि केर ज्ञान स्त्रीगण केँ छलैन्ह जे पीढ़ी दर पीढ़ी अबैत रहलैन्ह। मैथिल संस्कृति, कला–कौशल सभटा स्त्रीगणक हाथ मे रहलैन्हः जे बाँचल अछि तकर श्रेयसी ओएह छथि जे बुड़ि गेल तकर अपयश पितृ–समाज के छन्हि।''[6]

जे नारी मिथिला मे विदुषी होइत छलीह ओ तंत्र–मंत्रक कारण घर मे बन्हाय लागल छलीह। जखन तंत्रक प्रभाव बढ़ल तऽ तान्त्रिक लोकनि कुमारि कन्याक अपहरण आ चारी कए ओकर बलि दैत छल अथवा योगिनी बना दैत छलैक। जाहि कारणेँ पुरुष लोकनि द्वारा वा स्वयं बाहर निकलय सँ परहेज करय लगलीह। बाद मे जखन मुगल आक्रान्ता भारत आयल तऽ ओ आरो आतंक मचा देलक। ओ तऽ विवाहित आ युवती सभ के उठबय लागल जे नारी लोकनि के आरो सकपंज कए देलक। डॉ0 खान लिखैत छथिः–'' के कयलकैन्ह षिक्षा सँ वंचित हिनका? की घर मे रहबाक अधिक आवष्यकता? की अनायास बढ़ैत दकियानूसी? तँ दकियानूसी किएक? इतिहासक पन्ना उनटौला सँ ज्ञात भेल जे बुद्ध विहार सभ अपन अन्तिम साँस लय रहल छल। भारतवर्ष मे समन्वयक तेहन लहरि प्रारम्भ भेल सातम शती सँ जे शैव, शाक्त आ वैष्णव एकहि ठाम पूजित भेलाह, बुद्ध नवम अवतारक रूप मे स्वीकृत भेलाह, अपना भरि सनातन धर्म जय कयलक। संधाराम आ विहार तँ राज्याश्रय रहितहुँ मुमुर्षु भ' गेल छल मुदा उत्तर दिषा सँ अबैत बौद्ध तथा भारतवर्ष केर विभिन्न भागक बौद्ध वज्रयानक दीक्षा मे दीक्षित भेल जे तंत्रयान छलैक, एमहर पहिनहि सँ छिटफुट कौलाचारी तांत्रिक लोकनिक चाल चूल छलैक। तंत्रक घोर प्रभाव छलैक। तांत्रिक क्रियाक निमित्त अक्षत कुमारि चाही छलैक। ओ लोकनि जहिं–तहिं सँ कन्या उठबय लागल। समाज मे भय व्याप्त भ' गेलैक। कन्या कें आश्रम सँ की पाठशाला सँ सेहो निकालि शीघ्र विवाह क' फरागति पयबाक एकटा कारण भेटि गेल। स्त्रीगणक राह–बाट प्रकाश सँ अन्धकार दिस बढ़ि गेल। स्त्रीक महत्व समाप्त भ' गेल। देवताक अंष सँ निर्मित देवीदुर्गा धरि केर शास्त्रीय पूजनक अधिकार स्त्री के नहि रहल।''[7]

पक्षधर मिश्र आ हुनक बहिन सुलक्षणा माय–बापक मृत्युक कारण अनाथ भए गेल छलथि। तखन गामक स्त्री–पुरुष लोकनि हुनका दूनू भाय–बहीन केँ ओहि समयक प्रसिद्ध आचार्य त्रिलोचन पंडितक ओतए लए गेलथिन से देखि स्त्रीगण लोकनि कहैत छथिः–

''गुरु पत्नीक रूप केहन दिव्य छलनि'' एकटा स्त्री बजलीह।

''तहिना स्वाभाव मधुर, प्रसूति गृह मे रहितहु बुद्धि स्थिर छलनि तखन ने ओतेक टा पइघ गप्प कहलनि।''

''पंडितक अर्धांगिनी छथिन्ह ने।''

''हे लुरिगर छथिन्ह, केहन दिव्य अरिपन आँगन आ यज्ञशाला मे छलैक।

''तेहने राँगल–ढौरल देवाल आ रगं–विरगं क चित्र छलैक।''

गुरु सँ अधिक गुरुपत्नी सँ प्रभावित छलीह ग्रामीण आइ–माइ, हुनका सभक मुखमण्डल पर सन्तोषक भाव छलनि जे बच्चा सभ विशेष रूपेँ सुलक्षणा, एकटा कुशल स्त्रीगणक संग रहय गेलीह अछि।''[8]

एहि सँ स्पष्ट अछि जे तत्कालीन समाज मे शिक्षाक संग लूरि व्यवहार मे निपुणता होइत छल। घरक व्यवस्था मे स्त्रीक महती कर्तव्य होइत छलैक। जकरा ओ सुघरता सँ सम्पादन करैत छलीह। तेँ शिक्षा प्राप्त कय घुरलाक बाद सुलक्षणा अपन भाए पक्षधर मिश्र के एकटा शिक्षापीठ चलयबाक विचार देलथिन आ स्वयं ओहि लेल पर्याप्त परिश्रम कए माँ सरस्वतीक स्थापना कयलनि। डॉ0 खान लिखैत छथि–''सुलक्षणा दाइ घर, यज्ञशाला आ पाठशाला केँबेस साज श्रृंगार कए देने छलखिन। आमक पातक बन्दनवार छलैक, केराक थम्ह आ नारियरक गाछ सोझाँ मे रोपल छलैक। पिठारक अरिपन बीच आँगन मे छलैक। ओम्हर यज्ञ शाला मे चारूकात अरिपन देल छलैक।''[9]

उत्तर वैदिक कालक आरम्भ भए गेल छलैक। तंत्र–मंत्र सेहो वेद मे स्थान पाबि रहल छल। अथर्ववेद के वेदक रूप मे मान्यता भेटि गेल छलैक। समाज मे सनातनी तथा बौद्ध तांत्रिक अमरलत्ती जकाँ पसरल छल। बज्रयानी तंत्रयानी लोकनि भाँति–भाँतिक साधना वास्ते अक्षत कुमारिक टोह मे रहय लगलाह। बड़ जोर हल्ला भए गेल छलैक जे बंग आ गौड़ीय देश मे पाठषाला सभ सँ किषोरी लोकनि के उठबा लेल जाइत छैक। कन्या केर पिता लोकनि अपना कर्तव्य सँ च्युत होएबाक डरेँ कन्यादानक फिकिर मे लागि जाइत छलाह। भोगवादी कौलाचारी योगी होथि किंवा अनेक तारा युक्त अवलोकिवेष्वर साधना केर विविधताक लेल हुनका डोमिन सँ लए ब्राह्मण कन्या अक्षत कुमारिक आवष्यकता छलनि। तेँ तत्कालीन समाज सावधान भऽ गेल छल। एकरहि परिणाम स्वरूप बाल विवाह दिस लोकक रूचि बढल जा रहल छलैक। इएह कारण छल जे वाचस्पति मिश्र सन विद्वान जनिक बहीन–पत्नी सभ पढ़लि लिखलि, तैयो ओ वचिया सभ के खड़ी घरबय सँ मना कए देलखिन। द्रष्टव्य अछि उषा किरण खानक उक्ति–''

''की गप्प अछि? अबै जाऊ।'' भामती पटिया ओछा देलनि।

''बहिन दाइ, देखियौक अइ कन्या लोकनि केँ, पाटी लए पंडितजी लग गेलैक, ओ बैला देलखिन। बालक सभ केँ राखि खरी घरा देलखिन एकरा सभ के नहिं। कनैत–कनैत बताहि

भेल छैक।''–एकटा स्त्री कहलखिन।

''राघो कका कहैत छथि जे हमरा लोकनि आब कन्या केँ पाठषाला मे प्रवेष नहि देब। पहिने एगारहम मे वर्जित कय देने छलखिन आब एक्केबेर कहइत छथिन नहि पढ़ाएब। एना कोना हेतैक?''–दोसर छलीह।

''हम की कए सकैत छी?''–भामती बाजलीह।

''अहाँ स्वयं विख्यात गुरूक पढ़लि–गुनलि पुत्री छी। अहाँ भट्ठा घरा दिअउ। जखन पलखति होएत विद्यादान देबैक, हमरा लोकनि सेहो पढ़ा–गुना दबै।''–एकटा छलीह।

''नहि धरएबैक त' ई कन्या लाके नि आन्हर–बहीर जकाँ भऽ जेतीह। माने औनाइये बहिन दाइ।'' दोसर छल. खिन। भाभती प्रस्ताव सुनि स्तम्भित भ' गेलीह।''[9]

एकटा स्त्री पात्र छथि सुलक्षणा। ओ वाचस्पति मिश्रक छोटि बहिन रहितहु अपन भाएक सुख सुविधाक लेल अत्यधिक चिन्तित रहैत छथि भालो जे हिनका दूनूक माय–बापक देहान्तक बाद सभ सँ बेशी ध्यान रखैत छलीह। एहि सँ स्त्रीक दया भावक अतिरंजन कहल जाय सकैत अछि। सौदामिनी जनिक पिता वैद्य छथिन आ ओ अपन पिताक टहल करैत–करैत किछु किछु औषधिक ज्ञान पाबि लैत छथि मुदा संयोग सँ वज्रयान द्वार अपहृत भए जाइत छथि, मुदा की भेलनि ओ एकटा उच्च औषधालय मे ज्ञान पाबि नीक वैद्य बनि गेलि छलीह। बहुत दिन धरि बाहर मे सेवा कए गाम अबैत छथि आ गाम मे बैदायी करैत छथि। मुदा पुनः अपन कर्तव्य पालन लेल जन सेवाक लेल ओ अपन गाम छोड़ि दैत छथि मुदा जखन भामतीक विमारीक सूचना भेटैत छनि तऽ ओ गामहि मे रहय लगैत छथि।

भामती स्वयं कर्त्तव्य परायणा आ पतिव्रता नारी छथि। ओ अपन सम्पर्ण सौख–सेहन्ता सेहो अपन पतिक सेवा मे न्योछावर कए दैत छथि। उषाकिरण खान लिखैत छथि–''पडित वाचस्पति मिश्र विवाह कए पत्नी केँ आनने रहथि। अपना हुलास मे सभटा बिसरि गेलाह आ लागि गेलाह द्वैत–अद्वैतक विभदे क विभदे करय मे। दर्शन षडदर्शन केर घूर्णित जल मे घुरमुरिया खाइत अठारह वर्ष बिता क' पोथी पूर्ण कयलनि। कथा छैक जे हुनकर धर्मपत्नी भामती हुनकर भोजनादि केर व्यवस्थाक अतिरिक्त सदा साकांक्ष रहैत छलथि जे कतहु दीप नहिं पझा जाइक। ओ अहर्निश जागि कए दीप मे तेल आ बाती बदलैत रहलीह। कोनो लेखकक पत्नी लेल ई अत्यन्त कठिन आ दुर्लभ काज करब थिक। आगाँ कथा रोचक आ मार्मिक छैक। वाचस्पति पोथी पूर्ण कयलनिः दीपक टेमी उसकबैत पत्नीक झोखरल

हाथ देखि चौंकि उठलाह, हाथक सूत्र धए दृष्टि मुख पर पड़लनि। के छथि ई गत यौवना, की करैत छथि हमरा घर मे? षडदर्शनाचार्य कें ने अपन अठारह वर्षक भोजनादि व्यवस्थाक मूल मोन छनि ने दीपक ठोसक उपस्थिति, नइ तेल आ नइ बातीक महत्ताक भान छनि ने ओकरा सतत ज्वलनषील बनौने रहयवालीक साघनाक ज्ञान छनि। ओ सुधि–बुधि बिसरि क' पुछैत छथि जे ''अहाँ के?'' स्त्री कहैत छथिन हम अहाँक पाणिग्रहीता धर्मपत्नी 'भामती'। आ ओ कानय लगैत छथि। ओ पुछैत छथि कनैत किएक छी?' 'किएक तँ अहाँक कुल हमरा सँ नहि चलत।.. सन्तान किंवा पुत्र कएटा पीढ़ी धरि सूत्र बनौने रहैत छैक? ओ कालदोष सँ विच्छिन्न भए जाइत छैक। हम भामती कें यावच्चन्द्र–दिवाकरक अमर रहक सूत्र दैत छियनि सन्तान रूप मे अहि टीकाक नामकरण करैतछी–'भामती टीका।'[10]

निष्कर्ष रूप सँ हम देखैत छी जे भामती नारी परिवर्तनक जाहि गाँठ के खोलैत अछि ओ आजुक समय मे चिन्तनीय अछि। कोना एकटा धर्मक प्रथा सम्पूर्ण नारी समाज कें अन्हारक गर्त मे डुबा कए छोड़ि देलक। पुरूष समाज मात्र मूक द्रष्टा बनि देखैत रहलाह आ हुनका सभ के गर्त मे जयबाक मार्ग प्रषस्त कयलनि। ई उपन्यास वास्तव मे मैथिल समाजक अकर्मण्यता के उजागर करैत एकटा नव चिन्तनक लेल प्रेरित करैत अछि।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

lUnHk lph&

1. डॉ0 वासुकी नाथ झा, 'हसीना मंजिल पर एक दृष्टि, सान्ध्य गोष्ठी, बारहम पुष्प, नवम्बर–2020
2. मोहन भारद्वाज, हसीना मंजिलः एक समीक्षात्मक प्रतिक्रिया
3. उषा किरण खान, भामती, भूमिका, प्रकाशन वर्ष–2007
4. अशोक, उषाकिरण खानक उपन्यास, सान्ध्य गोष्ठी, नवम्बर–2020 पृ0–7
5. तारानन्द वियोगी, उषा किरण खानक लेखन–स्वभाव, सान्ध्य गोष्ठी, न0 2020 पृ0–11
6. उषा किरण खान, भामती, भूमिका,
7. ऐजन, भूमिका
8. ऐजन, पृ0सं0 20–21
9. ऐजन, पृ0सं0–82–83
10. ऐजन, पृ0सं0–भूमिका एवं पृ0सं0–189

Cite this Article-

'डॉ0 राज कुमार राय,' भामती उपन्यास मे नारी विर्मश', Shodhpith International Multidisciplinary Research Journal, ISSN: 3049-3331 (Online), Volume:1, Issue:05, September-October 2025.

Journal URL- https://www.shodhpith.com/index.html

Published Date- 04 September 2025

DOI-10.64127/Shodhpith.2025v1i5006